शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कुसुम खेमानी की कहानियों में मानवीय मूल्य

सोनदीप (शोधार्थी)
एस.सी.डी. राजकीय महाविद्यालय
लुधियाना, पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

मूल्य वह आदर्श या लक्ष्य होते हैं, जिनके आधार पर मानवीय परिस्थितियों का मूल्यांकन किया जाता है। इन्हीं मूल्यों को व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण समझता है। जीवन जीने के लिए मूल्यों का होना आवश्यक है। प्राचीन काल से ही मानवीय मूल्य साहित्य में प्रतिबिंबित होते रहे हैं। जब भी मनुष्यता पर संकट आया है, मनुष्य ने इन मूल्यों की तलाश साहित्य में की है। मानवीय मूल्यों में विश्वास बनाये रखने का काम साहित्य ने किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में कहानीकार कुसुम खेमानी की कहानियों में मानवीय मूल्यों पर विचार किया गया है।

भूमिका

मूल्य ही व्यक्ति को सही दिशा दिखाते हैं, क्योंकि मूल्यों के द्वारा सभी प्रकार की बातों का मूल्यांकन किया जाता है, चाहे वे भावनाएँ हों या विचार, व्यक्ति के गुण हों या अवगुण, लक्ष्य हों या साधन। मानवीय मूल्य ही समाज में व्यवस्था व सन्तुलन को बनाए रखने में सार्थक सिद्ध होते हैं। मानवीय मूल्यों के कारण सामाजिक सम्बन्ध टूटते नहीं हैं, उनमें एक तालमेल की स्थिति बनी रहती है। जिसके परिणामस्वरूप समाज की व्यवस्था सुचारू रूप में चलती है तथा सिद्धान्तों और नियमों के अनुसार व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह करता है। मूल्यों का अस्तित्त्व मानव की इच्छाओं पर आधारित होता है। मानव मूल्यों द्वारा ही व्यक्ति इच्छाओं तथा आदर्शों को प्राप्त करता है। इसी सन्दर्भ में हेमेन्द्र पानेरी का मत उल्लेखनीय है, जिनके अनुसार, "मानव समाज मूल्यों का संगठन एवं संकलन है, मूल्यों के सोपानों के सहारे ही मनुष्य अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं एवं आदर्शों को प्राप्त करता है।"

मूल्य मानव के व्यवहार में ऐसे आदर्श पैदा करते हैं, जिससे व्यक्ति दूसरों के साथ सहज रूप से बातचीत करता है, आपसी सम्बन्ध बनाता है, दूसरों का अस्तित्त्व स्वीकार करता हुआ उसे आदर भाव प्रदान करता है, अपनी संस्कृति और सभ्यता की मर्यादा को पहचानता है और समाज के प्रति अपना उच्च दृष्टिकोण रखता है। मानवीय मूल्य की स्थापना करने में, उसके संवर्द्धन-पोषण में साहित्य हमेशा से एक सशक्त माध्यम रहा है।

कुसुम खेमानी की कहानियों में मानवीय मूल्य

साहित्य में अभिव्यक्त मानवीय मूल्य की स्थापना की इस कड़ी में 21वीं सदी की हिन्दी रचनाकार कुसुम खेमानी का नाम आदर के साथ लिया जाता है, जिन्होंने अपने कथा साहित्य में वर्तमान समाज में मूल्य की स्थापना निमित्त अपनी कलम चलाई है। कुसुम खेमानी हिन्दी साहित्य जगत् में अपनी अमिट छाप छोड़ चुकी हैं। वे स्वयं एक समाजसेविका रही हैं, अतः उनके रचनाकर्म में मानवीय मूल्य का निर्वाह,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उसकी स्थापना एवं प्रसार स्वाभाविक ही है। समाज के प्रति उनकी सोच, उनका दृष्टिकोण क्या रहा है, यह उनके साहित्य को पढ़कर स्वतः ज्ञात हो जाता है। इनकी रचनाओं में बालकोश, आलोचना, जीवनी, यात्रा-वृतान्त, ललित निबन्ध, उपन्यास, कहानी-संग्रहों को शामिल किया जा सकता है। यह शोध-पत्र कुसुम खेमानी के तीन कहानी-संग्रहों में से 'सच कहती कहानियाँ' कहानी-संग्रह में मानवीय मूल्य पर आधारित हैं।

'सच कहती कहानियाँ' कहानी-संग्रह घर-परिवार के भीतरी जीवन को और व्यक्ति की एक-दूसरे के प्रति संवेदना को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करती है। इनकी कहानियाँ 'रश्मिरथी माँ', 'लावण्यदेवी', 'मेरीऐन' 'भेद बताओ', 'एक पारस पत्थर' आदि में मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति है। इन्होंने अपनी कहानियों में 21वीं सदी की मानवीय स्थितियों और समस्याओं को भी दिखाने का प्रयास किया। फिर चाहे वे बहू द्वारा सास पर किया गया अत्याचार हो, या टूटता हुआ परिवार। इनकी कहानियों के पात्र परिस्थितियों से न डगमगाते हुए अपने पथ पर आगे बढ़ते रहते हैं। कुसुम खेमानी की कहानियों की यह विशेषता रही है कि उनकी कहानियों में बंगाली, राजस्थानी और उर्दू भाषाओं का प्रयोग होने के बावजूद पाठकों को पढ़ने हेतु प्रेरित करती हैं।

कुसुम खेमानी की कहानी 'रश्मिरथी माँ' की बिल्क़ीस एक ऐसी पात्र है, जो दूसरों की भलाई करने से पीछे नहीं हटती और जहाँ तक हो सके उनकी सहायता करती है। बिल्क़ीस पिछले 10 सालों से 'पिछड़ा महिला केन्द्र' को चलाती है। यहाँ लगभग 50 लड़कियां अपने जीवन के अँधेरे को दूर करने का प्रयास करती हैं। बिल्क़ीस हर सुविधा देकर इन महिलाओं की मदद करती है और बिना किसी फल की इच्छा के अपने काम को आगे बढाती है। बिल्क़ीस की उदारता का पता तब चलता है जब उसी के केन्द्र से जुड़ी महिला ज़ाहिदा मुसीबत में होती है। ज़ाहिदा गरीब है, बिल्क़ीस उनके दर्द को अपना दर्द समझती है। जब उसे पता चलता है कि गरीबी ने ज़ाहिदा की कमर तोड़ रखी है, जबकि तीन बच्चों के होते हुए एक और पेट में पल रहा है, बिल्क़ीस ज़ाहिदा पर चिल्ला उठती है, "माथा ख़राब है तुम लोगों का ? तुम लोग आदमी हो कि कसाई ? दमादम औलादें जन रहे हो! भूखा मारने के लिए ? या ख़ुदा, रहम कर इन बेवकूफों पर।" क्योंकि बिल्क़ीस को लगता है, "जिन्होंने ग़रीबी के पाले(बर्फ) को नहीं झेला है। ग़रीबी का पाला ? बहुरूपिया होता है, जो गर्मी में आग उगलता है और ठंड में बर्फ।" बिल्क़ीस अपने मूल्यों को हमेशा आगे लेकर चलती है और ज़ाहिदा के दुःख को अपना दुःख समझती हुई उसे इस समस्या से बाहर निकालने का प्रयास करती है। "बिल्क़ीस आपा ने आनन-फानन में अपनी डॉक्टरनी भाभी से बात कर ज़ाहिदा का गर्भपात और रहमान की नसबन्दी करवा दी।" "यह लो तुम सबकी बम्बई की ट्रेन टिकटें और कपड़े। यह सारा खर्चा अपने केन्द्र की सुप्रिया चक्रवर्ती ने किया है; इसलिए उन्हें धन्यवाद-प्रणाम ज़रूर कह देना। बम्बई में नरीमन प्वायंट पर मेरी मुँहबोली बेटी शकुन(धनाढ्य समाजसेविका) तुम लोगों की गार्जियन बनने को राज़ी हो गई है।" आज के समय में लोग सिर्फ-और-सिर्फ अपना स्वार्थ देखते हैं। बिल्क़ीस निःस्वार्थपूर्वक ज़ाहिदा के परिवार की सहायता करती है। व्यक्ति अपने मूल्यों में बँधकर चले तो आदर्श रास्ते पर चल सकता है।

इसी कहानी में कुसुम खेमानी ने ज़ाहिदा के आदर्श रूप को भी दिखाया है, जो अपने उदार

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

व्यवहार से दूसरे लोगों की सहायता करती है। ज़ाहिदा उन घरों को रौशन करती है, जहाँ बच्चे की किलकारी कभी गूँजी न थी। भले ही पैसों के लिए ज़ाहिदा अपनी कोख से बच्चों को जन्म देकर उसे उसके माँ-बाप को सौंप देती थी। लेकिन ''उसकी उस छवि में कहीं भी किराए की कोख का ग्लानि बोध नहीं; दाता की उदारता का सन्तुष्टि भाव; परिलक्षित हो रहा था।" बिल्क़ीस द्वारा उसके इस निर्णय पर प्रश्नचिन्ह लगाने पर ज़ाहिदा कहती है, "मैं जो यों भी हर साल इस धरती पर एक बच्चे की आमद कर देती थी! वही ज़ाहिदा, यदि अपनी उसी कोख़ से किसी वंचिता माँ की कोख भर कर उसके घर में उजाला भर देती है तो पाप करती है ?.... और मेरी इस मेहनत के एवज़ में यदि हमारी माली हालत कुछ सुधकर बच्चों को रहना, खाना-पीना और पढ़ना मुहैय्या करवा देती है तो यह अन्याय है ?.... अचानक ही मैं माँ से डायन बन जाती हूँ ? हाँ! यदि यही काम मैं मुफ़्त में करती तो दयावान कहलाती ?" हमारे समाज की यह विडम्बना ही है कि ऐसी स्त्री को शक भरी दृष्टि से देखा जाता है। ज़ाहिदा जैसी औरतों को समाज में सम्मान मिलना मुश्किल भरा कार्य है। लेकिन ज़ाहिदा जैसी औरतें किसी के घर को खुशियों से भरने में अहम भूमिका निभाती हैं। "ये देवी है प्रकाश की। 'क़िराए की कोख' जैसे घटिया शब्द का प्रयोग कर आप अच्छाई की परिभाषा को मत बदलिए!.... ये प्रतीक हैं श्रद्धा की! ममता की! ये जननी हैं! ये माँ हैं! सार्वभौम माँ!!'' समाज में ऐसी माँओं को सम्मान मिलना चाहिए।

कुसुम खेमानी की अन्य कहानी 'लावण्यदेवी' में भी मानवीय मूल्यों का पुट देखने को मिलता है। लावण्यदेवी नामक पात्र इस कहानी की नायिका है, जो धनाढ्य परिवार की स्त्री है। जिसका जीवन अपने पति, दो बेटों और एक बेटी के साथ अच्छे से कट रहा है। लावण्यदेवी किसी को भी अपने सिद्धान्तों, अपने मूल्यों से बाँधकर नहीं रखना चाहती। पति की मृत्यु के बाद छोटा बेटा कम्पनी की तरफ से मिले फ्लैट में रहने चला जाता है, बेटी की शादी हो जाती है और बड़ा बेटा भी अपनी पत्नी के साथ करोड़ों का घर छोड़ बाहर फ्लैट लेकर रहने चला जाता है। लावण्यदेवी उस परिस्थिति में भी अपने आप को अकेला न मानती हुई, उसी में खुश रहती है। उसके मूल्यों की परख तब होती है, जब उसके जीवन में ऐसी घटना घटती है कि वे अपनों के ख़िलाफ खड़ी हो जाती है। गलत का साथ न देते हुए, वह सच का साथ देती है। जब उसे पता चलता है कि उसके पोते अम्लान ने हरि, जो उसी के घर का नौकर है, की बेटी को छेड़ दिया है, तो वह तुरन्त थाने जाकर रिपोर्ट दर्ज करवाती है, "तुम तुरन्त रिपोर्ट लिखो। मैं, लावण्यदेवी चौधरी इस बात की साक्षी देती हूँ कि मेरे पोते अम्लान ने इस मंजु नाम की लड़की का रेप किया है।" कुसुम खेमानी ने इस कहानी में लावण्यदेवी के मूल्यों को दिखाकर मानवीय मूल्यों को दर्शाया है। कहानी में संक्रमण की स्थिति तब पैदा होती है, जब हरि धनाढ्य परिवार से कोई मतभेद नहीं रखना चाहता, इसलिए रिपोर्ट वापस ले लेता है। इस स्थिति में लावण्यदेवी की सोच में उपजे शब्द इस बात की पुष्टि करते हैं कि आज के मानवीय मूल्यों का अस्तित्त्व अर्थ केन्द्रित है। लावण्यदेवी सोचती है, "ऐसी विडम्बना से आज से पहले कभी उनका साक्षात्कार नहीं हुआ था कि उनके ही सिद्धान्त आपस में टकराने लगे और वह टकराहट इतनी तीव्र थी कि उससे आग-सी चिंगारियाँ निकलने लगी। क्या आज उन्हें अपने सिद्धान्तों पर व्यावहारिकता के झूठ की चिप्पियों की 'वेल्डिंग'

करनी पड़ेगी ? जीवन का यह कैसा मोड़ है कि आज पहली बार उन्हें आगे का रास्ता नहीं दिख रहा ?... बेसिर-पैर के प्रश्न उन्हें मथे डाल रहे थे और वे अंधेरी गुहाओं में दिग्भ्रमित-सी सोच रही थीं कि क्या है यह सब ?" लावण्यदेवी मूल्यों-अमूल्यों के असमंजस में पड़ी सोचती है, "क्या मेरा सारा जीवन झूठ है ? मेरे सिद्धान्त ? मेरा सत्यव्रत ? मेरा ईमान-क्या सब के सब बकवास है ? आज तक जिन्हें मैंने जीवन-मूल्यों की संज्ञा दे रखी थी, क्या वे सब एक ढोंग मात्र थे ? सत्य को अपने जीवन की आधारशिला मानना, गलत था ? क्या झूठ से समझौता नहीं करना; संदिग्ध स्वर्णावसरों को ठुकराना आदि भूल थी?" इन सब प्रश्नों ने लावण्य को झंझोड़ कर रख दिया और उसे आज के मूल्य अर्थ केन्द्रित लगने लगे थे, आज मूल्यों की दिशा ही बदली-सी प्रतीत हो रही थी। वह आगे सोचती है, "क्या अर्थ से कम और विवके से अधिक प्यार करना गलत था ? मेरी सन्तानों में मूल्यों से ज्यादा स्वार्थबुद्धि का मोल है; तो क्या ग़रीब का ईमान इतना सस्ता होता है कि दुराचारी के सिक्के की चाल क्षण मात्र में ही उसका धर्म और ईमान डिगा देती है ? यदि अनन्या को हरि के बेटे ने छेड़ा होता तो ? तो क्या होता ? क्या तब भी अपूर्व, और अरणव आदि की यही प्रतिक्रिया होती जो आज है ? क्या पैसा सचमुच सारे मूल्यों से बड़ा है ?" आज की पीढ़ी के लिए मूल्य सिर्फ अर्थ पर आधारित है, तभी तो सारे काम पैसे के बल पर कर लिये जाते हैं। कुसुम खेमानी ने लावण्यदेवी के माध्यम से मानवीय जीवन का यथार्थ व्यक्त किया है और मानवीय मूल्यों के बदलते रूप को स्पष्ट किया है।

मानवीय मूल्यों द्वारा व्यक्ति घर-परिवार में हो रहे सही-गलत के प्रति सोच-विचार करता है। घर की सुख-शांति को बनाए रखना भी व्यक्ति मूल्यों से सीखता है। इसी कहानी-संग्रह की एक अन्य कहानी है 'एक माँ धरती-सी!' कुसुम ने इस कहानी के माध्यम से मूल्यों की स्थापना होती दिखाई है कि कैसे एक माँ अपने सिद्धान्तों को नहीं तोड़ती। इस कहानी की पात्रा बानी माशी(मौसी) अपने बेटे-बहू के अत्याचारों को सहती है। उसे अपने बेटे के ख़िलाफ शिकायत करने का प्रस्ताव दिया जाता है तो वह उसे नकारती हुई "कहने लगीं, इससे मेरे बेटे का अपमान होगा और मैं जीते जी ऐसा नहीं होने दूँगी। उसकी पोजीशन बहुत बड़ी है और उतना ही व्यापक है उसका प्रभामंडल। मेरी वजह से उसमें कोई भी खरोंच आने के पहले मैं मर जाना पसन्द करूँगी।" कुसुम खेमानी ने अपनी कहानी की पात्र के माध्यम से उस कहावत को सिद्ध कर दिया कि पुत्र कुपुत्र हो सकता है, पर माता कुमाता कभी भी नहीं बन सकती। यहाँ मूल्यों की स्थापना ही है कि एक माँ अपने घर के कलह को समाज के सामने व्यक्त नहीं करना चाहती।

व्यक्ति जब अपने उसूलों का पक्का होता है और स्वाभिमान के साथ अपना जीवन व्यतीत करता है तो उसमें मूल्यों का होना स्वाभाविक है। ज़िन्दगी जीने का तरीका मूल्य ही इन्सान को सिखाते हैं। एक अन्य कहानी 'वक़्त एक साधारण औरत की' में ऐसी ही नारी पात्र है जो बचपन में ही बाल विवाह जैसी प्रथा की शिकार हो जाती है और बचपन में ही विधवा हो गई। गाँव में सब चुनिया बुआ कह कर सम्बोधित करते थे। चुनिया ने अपना सारा जीवन लोगों की भलाई और सेवा करने में निकाल दिया। चुनिया धनाढ्य परिवार से सम्बन्धित होने पर भी खुद अपने हाथों मेहनत कर पैसा कमाती और वह

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पैसा लोगों की सहायता के लिए खर्च करती थी। चुनिया बुआ "जब इतने बड़े घर की बेटी थी और उसी का राज चलता था तो बुआजी इतनी मेहनत क्यों करती थी ? घरवालों को कहकर गरीबों को रुपया-अन्न वगैरह दिलाने का इन्तजाम क्यों नहीं किया उन्होंने ?" चुनिया के अपने उसूल थे कि वह किसी के आगे हाथ नहीं फैलाती थी, "हालाँकि घर में चारों ओर सम्पदा बिखरी पड़ी थी पर बुआ ने कभी भी उसमें से एक पैसा नही लिया। वे उस धन के तालाब में कमल-पत्ते की तरह रहतीं-न उसे छूना न उस धन को अपना मानना।" चुनिया बुआ बिना किसी दिखावे या अपने नाम का डंका बजाए बिना ही अपना जीवन लोगों के लिए जीती रही। गाँव वालों को चार हजार रूपये का कुआँ खुदवाकर देती है, जिसे लोग उसके मरने के बाद भी याद करते रहते हैं। चुनिया "बिना किसी एनजीओ का बिल्ला लगाए, बिना किसी पर भार बने, उस समय के चार हजार का कुआँ खुदवाती, ढेरों का जीवन सुधारती, यह पराश्रित बाल-विधवा क्या एक मिसाल नहीं है खुद्दारी से जीने की और जीना सिखलाने की ?" हर व्यक्ति को चुनिया जैसे पात्रों से प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने जीवन को स्वाभिमान के साथ जीना चाहिए। मानवीय मूल्य यह नहीं है कि कोई छोटा-सा कार्य किया और अपनी वाह-वाह करवाओ, बल्कि अपने आदर्शों, सिद्धान्तों को साथ लेकर जिन्दगी जीना है।

निष्कर्ष

कहानीकार कुसुम खेमानी ने अपने प्रथम कहानी-संग्रह में कथा, घटना, प्रसंग, पात्र-चरित्र आदि के माध्यम से पाठकों के मर्म को झकझोरते हुए समाज में मानवीय मूल्य की स्थापना का स्तुत्य प्रयास किया है। कथाकार ने 21वीं सदी के मूल्य-संक्रमण के दौर में मूल्य की स्थापना कर समाज को एक लौ प्रदान की है, जहाँ निरंतर मूल्य विघटन सर्वत्र देखा जा सकता है और आनेवाली पीढ़ी अंधेरे के गर्त में जाने को अभिशप्त है। उनके पात्र जो स्वयं कष्ट-भरे जीवन जीने के लिए मजबूर हैं, फिर भी सामाजिक नीति, नियम, मर्यादा को टूटने नहीं देते, उसका खुलकर विरोध करते हैं चाहे इसके लिए उन्हें अपनों के विरूद्ध क्यों न होना पडे। इस प्रकार इन कहानियों में लेखिका ने यह स्पष्टतः कहना चाहा है कि भले ही परिस्थितियाँ विषम हो जाएँ परन्तु व्यक्ति को कभी-भी अपने सिद्धान्तों, मूल्यों से समझौता नहीं करना चाहिए। इसके विपरीत उन्हें इसके समर्थन में खुलकर सामने आना चाहिए।

सन्दर्भ सूचीः

1 पनेरी, हेमेन्द्र, 'स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासः मूल्य संक्रमण', दिल्ली, संघी प्रकाशन, संस्करण-1974, पृष्ठ-150.

2 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', नयी दिल्लीः राधाकृष्ण, संस्करण-2012, पृष्ठ 27

3 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 27.

4 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 28.

5 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 28.

6 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ',पृष्ठ 30.

7 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ',पृष्ठ 31.

8 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ',पृष्ठ 35.

9 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ',पृष्ठ 68.

10 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 71.

11 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 71.

12 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 71.

13 पूर्वोक्त, खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 14.

14 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 101.

15 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 101.

16 खेमानी, कुसुम, 'सच कहती कहानियाँ', पृष्ठ 102.